अकहानी आंदोलन के जनक थे गंगाप्रसाद विमल

प्रो. अज़हर हाशमी
लेखक, कवि और समालोचक हैं

मेरे मौलिक मत में अकहानी एक ऐसा आंदोलन था जिसने स्वयं को वास्तविकता से जोड़ा/पुरानी कहानी के तिलिस्म को तोड़ा/ नई कहानी से आगे दौड़ा . नयी कहानी और साठोत्तरी दशक के दौर में जहां कमलेश्वर, राजेंद्र यादव और मोहन राकेश की त्रयी अपना कमाल दिखा रही थी, वहां गंगाप्रसाद विमल का अकहानी के रथ का सारथी होना एक क्रांतिकारी घटना की तरह था . वैसे तो साहित्यकार गंगाप्रसाद विमल ने कविताएं भी लिखीं और शोधपरक लेख भी किंतु अकहानी आंदोलन के पुरोधा के रूप में वे चर्चित और स्थापित हो गए .मेरे मौलिक मत में परंपराओं के पिंजरे को तोड़कर बाहर आने की छटपटाहट और आज़ादी के आकाश में उड़ने की अभिव्यक्तिरूपेण कोशिश ही अकविता है . जगदीश चतुर्वेदी, कुंवर नारायण और शकुन्त माथुर अकविता की त्रिवेणी रहे . बाद में कैलाश वाजपेयी भी अकविता के आंगन में आ गये . कुछ कवियों ने अकविता में शब्दों की बाज़ीगरी भी की है .

गंगाप्रसाद विमल अकहानी आंदोलन के जनक थे. जिस प्रकार साहित्यकार जगदीश चतुर्वेदी हिन्दी में अकविता आंदोलन के प्रवर्तक थे उस प्रकार गंगाप्रसाद विमल को अकहानी आंदोलन का प्रवर्तक, प्रणेता और सूत्रधार कहा जाता है. चूंकि अकहानी के ध्वजवाहक गंगाप्रसाद विमल के साथ अकविता के सारथी जगदीश चतुर्वेदी का उल्लेख आ गया है, तो संक्षेप में यह जानना भी ज़रूरी हो जाता है कि अकविता क्या है और अकहानी किसे कहते हैं. अकविता दरअसल बीसवीं शताब्दी के सातवें दशक में नई कविता के विरोध में उभरा आंदोलन था, जिसने कविता के परंपरागत मानदंडों को उलट दिया. अकविता का अंदाज़ गद्यात्मक है.

मेरे मौलिक मत में परंपराओं के पिंजरे को तोड़कर बाहर आने की छटपटाहट और आज़ादी के आकाश में उड़ने की अभिव्यक्तिरूपेण कोशिश ही अकविता है. जगदीश चतुर्वेदी, कुंवर नारायण और शकुन्त माथुर अकविता की त्रिवेणी रहे. बाद में कैलाश वाजपेयी (जो नयी कविता के भी पैरोकार रहे) भी अकविता के आंगन में आ गये. कुछ कवियों ने अकविता में शब्दों की बाज़ीगरी भी की है. उदाहरणार्थ प्रस्तुत है शकुंत माथुर की अकविता (एक घूमता हुआ रिकार्ड)-

'सुनो
मैंने गयी रेशमी उम्र पर
बहुत ही गरम प्रेस रख दी.'

अकविता के आंगन में सौमित्र मोहन और प्रभाकर माचने ने भी चहलकदमी की है. इस संदर्भ में प्रभाकर माचने की अकविता दो मर्ज़ एक हों) का यह उदाहरण प्रस्तुत है-

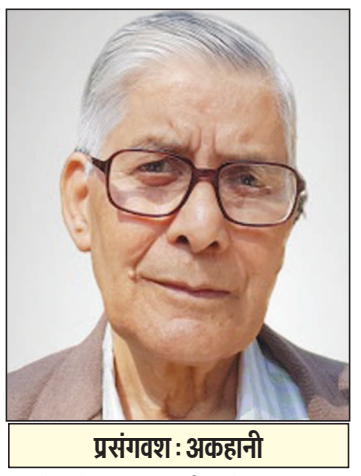

प्रसंगवश : अकहानी

'घूंट-घूंट साइनायड पीता हूं
एक घिसे सोल के
फटे जूते का टूटा हुआ फीता हूं
मन को समझता क्रांति का पलीता हूं।'

तो यह तो हुई अकविता की बात जो जगदीश चतुर्वेदी से चलकर प्रभाकर माचने तक पहुंची. अब मैं आता हूं अकहानी पर, जिसके जनक (जैसा कि कहा जा चुका है) गंगाप्रसाद विमल थे. प्रश्न फिर वही कि अकहानी किसे कहते हैं? उत्तर यह कि कहानी की पुरानी परिपाटी से हटने/ नयी कहानी से छंटने/यथार्थ के मोर्चे पर डटने का आंदोलन है अकहानी.

मेरे मौलिक मत में अकहानी एक ऐसा आंदोलन था जिसने स्वयं को वास्तविकता से जोड़ा/पुरानी कहानी के तिलिस्म को तोड़ा/ नई कहानी से आगे दौड़ा. नयी कहानी और साठोत्तरी दशक के दौर में जहां कमलेश्वर, राजेंद्र यादव और मोहन राकेश की त्रयी अपना कमाल दिखा रही थी, वहां गंगाप्रसाद विमल का अकहानी के रथ का सारथी होना एक क्रांतिकारी घटना की तरह था. वैसे तो साहित्यकार गंगाप्रसाद विमल ने कविताएं भी लिखीं और शोधपरक लेख भी किंतु अकहानी आंदोलन के पुरोधा के रूप में वे चर्चित और स्थापित हो गए. अकहानी आंदोलन कितना चला और कैसा चला यह प्रश्न महत्वपूर्ण नहीं है क्योंकि अकहानी आंदोलन रेखांकित तो हो ही गया. गंगाप्रसाद विमल अकहानी आंदोलन के पथ निर्माता-पथिक-पथप्रदर्शक तीनों छवियों में विख्यात हो गए. तक़रीबन चालीस साल पहले प्रकाशित उनके एक कहानी-संग्रह की भूमिका (रफ़ नोट्स) का एक अंश इस संस्मरणात्मक आलेख में दिया जा रहा है जो उनके चिंतन और रचना-प्रक्रिया की बानगी प्रस्तुत करता है-

'मुझे अक्सर उन पुराने सामानघरों की याद आती है. ठेठ बचपन के पुराने मकानों में सीढ़ियों के नीचे दुबके अंधेरे में वह एक जगह होती थी, जिसमें तमाम किस्म की उपयोगी, फ़ालतू, टूटी-फूटी चीज़ों का अंबार लगा होता था. वह घर का इतिहास होता था. बड़े-बूढ़ों के लिए संपन्नता के दिनों के प्रतीक फटे फर-कोट, टूटी कुर्सियां, कांच की बोतलें, सब-के-सब ऐसी चीज़ें थीं कि जब कोई बूढ़ा उन्हें उठाता तो वह अपने अतीत में खो जाता है और बच्चों को अपनी संपन्नता की कहानियां बताने लगता. हर संपन्नता टूट-फूटकर पुराने होते-होते सामानघर की चीजें बन जातीं. परंतु आज भी जब पुराने काग़ज़ों में कोई पुराना पता खोजते अचानक कोई दिमाग़ के कपाट खोल देती है और चेहरों पर चेहरे, बातों पर बातें याद आ जाती हैं और पते को खोजने का काम खत्म हो जाता है. फिर एक विचित्र ढंग की फुर्सत 'अतीत राग' में डुबो देती है. फिर कागजों पर काग़ज़ मिलते जाते हैं. जिनमें उन पुराने चेहरों की गतिविधियों के ब्यौरे इकट्ठे हैं. शायद इसलिए कि उन पर मैं कभी कहानियां लिखना चाहता था.'

प्रिय पाठकों! साहित्यकार गंगाप्रसाद विमल के कहानी संग्रह की भूमिका (कहानी के रफ़ नोट्स) के उक्त अंश से ज्ञात होता है कि एक रचनाकार को रचना प्रक्रिया में कितनी बूंदों/बारिशों/समंदरों को दिमाग़ में विचार के रूप में भरना पड़ता है. उल्लेखनीय है कि उत्तरकाशी (उत्तरांचल) में जन्में गंगाप्रसाद विमल के एक दर्जन से अधिक कविता संग्रह और कहानी संग्रह , चार उपन्यास तथा अंग्रेजी में अनुवाद की पांच पुस्तकें सम्मिलित हैं.

साहित्यकार गंगाप्रसाद विमल 1989 से 1997 तक मानव संसाधन विकास मंत्रालय नई दिल्ली में केंद्रीय निदेशालय (शिक्षा विभाग) में निर्देशक रहे. वे भारतीय भाषा केन्द्र जे.एन.यू. में प्रवक्ता तथा बाद में विभागाध्यक्ष भी रहे. अब मैं आता हूं उनसे जुड़े संस्मरण पर. मेरी उनसे फ़ोन पर बात 5 अप्रैल 2015 को विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन के पूर्व अध्यक्ष और आचार्य डॉ. हरिमोहन बुधौलिया ने करवाई थी. दरअसल 5.4.2015 को 'नवभारत' अखबार के 'सृजन' पेज पर मेरा संस्मरणात्मक आलेख प्रसिद्ध आलोचक विजय मोहन सिंह पर छपा था जिसे प्रो. बुधौलिया के घर पर उन्होंने पढ़ा था और पढ़कर मुझे बधाई दी थी. प्रो. बुधौलिया ने मुझे बताया था कि गंगाप्रसाद विमल 'नवभारत' की वह प्रति अपने साथ दिल्ली ले गए थे. यह घटना मेरे लिए संस्मरण हो गई.

कविता

संजू पाठक

वसुधा

मैं हूं वसुधा !
है बड़ा ही गहरा
मेरा और समय का
संबंध.
परंतु नहीं है कोई
अनुबंध..

कहते हैं लोग
मैं अद्भुत रहस्य की खान
हूं.
परंतु नहीं है ऐसा
कि मैं खुद से अनजान
हूं..

संयम, धैर्य,
गांभीर्य,अनुशासन
जैसे मानवीय गुणों की
मैं हूं पर्याय .
प्रत्येक मनुष्य के जीवन
से
जुड़े हैं यह समस्त
अध्याय ..

मुझसे ही तो है,
समस्त चर अचर का
सौंदर्य .
परिपूर्ण है मुझसे ही तो
मानव जीवन में माधुर्य

कालचक्र के साथ ही
गतिमान है मेरी रफ्तार .
नहीं चाहती हूं करना
कदापि
कोई अवांछित प्रहार ..
कण कण में है मेरे
विद्यमान ईश्वर का अंश

कर हस्तक्षेप मनुष्य ने
कर डाला विध्वंस ..

अब उत्तराखंड की
त्रासदी को ही देखिए,
कैसे हुई जल प्रलय !
जरा खुद ही सोचिए
क्यों कर ना हो जाए
सृष्टि जल में विलय..

क्यों दोष देते हो मुझे?
वसुंधरा अब कुपित है

स्वार्थ लोलुपता में
मानव स्वयं ही भ्रमित है
वस्त्रहीन सा कर दिया,
काटे वृक्ष असंख्य.
प्राणवायु को तरसते,
सिलेंडर हुए नगण्य..

अरे ! संरक्षण करो
मेरे संसाधनों का
अभी समय है रे स्वार्थी
मनुष्य .
अन्यथा आने वाली
पीढ़ियों का
कदापि सुरक्षित नहीं है
भविष्य..

गीत

बोलो महावीर की जय

पद्मश्री कैलाश मड़वैया

आओ मिल बैठ बनें, आज अभय
करें कर्म निर्जरा, पापों का क्षय।
करना नहीं कुछ भी मगर मन से जपें,
बोलो महावीर की जय,
बोलो महावीर की जय।
जिंदगी रेत का दरिया सहज प्रवाह नहीं।
यहाँ अवरोध पर अवरोध मगर थाह नहीं।
कैसे हम पार लगें, कैसे भव-सिंधु विजय
बोलो महावीर की जय
बोलो महावीर की जय।
हमने पानी में सदा मन की लकीरें खींचीं।
पीठ उजालों को दी औ' रात में आँखें मीचीं।
कैसे यह तिमिर छटे, कैसे सूरज हो उदय?
बोलो महावीर की जय,
बोलो महावीर की जय।
हमने मंदिर में सदा स्वार्थ की अर्चा की है।
कभी घर, गांव, गली, अह्म की चर्चा की है।
न देखा पार कभी, और न देखा है हृदय ।
बोलो महावीर की जय,
बोलो महावीर की जय।
जिंदगी भोग है पर धर्म को भोगो तो सही।
जिंदगी राग है पर राग में जागो तो सही।
राग औ 'भोग में करते रहो कर्मों का क्षय ।
बोलो महावीर की जय,
बोलो महावीर की जय।
जिंदगी अनमोल मगर व्यर्थ नहीं लुट जाये।
जान कर भी न अनजान में सिमट जाये।
सोचो वे पल हैं यही, लौट न आयेगा समय।
बोलो महावीर की जय,
बोलो महावीर की जय।
महावीर मात्र मूर्ति, नहीं शोभा सिर्फ मंदिर की।
सुविचार हैं जीवन्त और आत्मा हैं अन्दर की ।
सोचो तो आगत, अतीत, वर्तमान के यह समय।
बोलो महावीर की जय,
बोलो महावीर की जय।
लाभ नहीं नारों से, बोल कर जयकारों से।
काम, सरोकार के, प्रेरित हो गर विचारों से।
अहिंसा, अनेकान्त, अपरिग्रह मात्र मंत्र त्रय।
बोलो महावीर की जय
बोलो महावीर की जय।
पूजा पाठ, जयन्ति निर्वाण में न बाँधो इनको
अपने जीवन की हर सांस में साधो इनको ।
नहीं वर्ष, माह कुछ क्षण तो हों महावीर मय।
बोलो महावीर की जय,
बोलो महावीर की जय।

पुस्तक समीक्षा

मानवीय सरोकार की कहानियों का संग्रह

शैली बक्षी कड़कोतकर

शिखर सम्मान से सम्मानित वरिष्ठ कथा लेखिका डॉ उर्मिला शिरीष के व्यापक रचना-संसार में नई आमद है, उनका ताज़ा कहानी संग्रह 'मैं उन्हें नहीं जानती'. उर्मिला जी की कहानियाँ मूलतः मानवीय सरोकार की कहानियाँ हैं. यहाँ मानवीय रिश्तों की उलझनें हैं, विदेश में बसे लोगों की बेचैनी और अंतर्द्वंद है, बुढ़ापे की दस्तक है, अकेलेपन की धुंध है, गहरी उदासी का कोहरा है और इन सबके बीच एक अदम्य जिजीविषा है, जो उम्मीद की लौ को बुझने नहीं देती.

कुल जमा चौदह कहानियों का यह संग्रह शिवना प्रकाशन से हाल ही में प्रकाशित होकर आया है. शिवना प्रकाशन ने इसे सुरुचिपूर्ण ढंग से छापा है.हम सब उर्मिला जी की कहानियाँ लम्बे समय से पढ़ते आ रहे हैं.

इस संग्रह की पहली कहानी 'देखेगा सारा गाँव बंधु' गहरी संवेदनाओं की कहानी है जो संभवतः उनकी चर्चित कहानी 'बांधो न नाव इस ठांव बंधु' की एक और कड़ी है. दोनों कहानियों की भावभूमि एक-सी है. हँसमुख, जिंदादिल पिता मित्रवत युवा बेटे से अपने पहले प्रेम का रहस्य साझा करता है और उससे अमेरिका में अपनी प्रेमिका से मिलकर कुछ सामान (क़िताबें, चिट्ठियाँ) देने का आग्रह करता है. पिता के आकस्मिक देहांत से व्यथित बेटे के सामने विकट दुविधा है. पिता की अंतिम इच्छा पूर्ण करें या पिता को अपनी माँ का अपराधी मान कर इससे मुँह मोड़ ले. उर्मिला जी ने मानवीय संबंधों की जटिलता को इतनी सहजता और कोमलता से छुआ है कि कोई किरदार गलत नहीं लगता, यह कहानी की खूबसूरती है.

'कही-अनकही' आज के कटु यथार्थ की

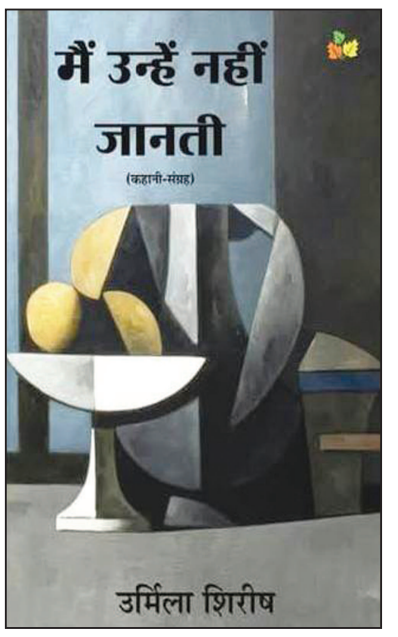

कहानी है. एकल परिवार, विदेशों में बसे बच्चे, घटती सामाजिकता, बुढ़ापा, अकेलापन, उस पर बीमारी और अस्पताल के चक्कर. अस्पताल के परिवेश का चित्रण इतना वास्तविक बन पड़ा है कि अस्पताल की अजीब महक महसूस होने लगती है. ऐसे मुश्किल वक्त में सतीश जैसे किरदारों का इर्द-गिर्द होना ही कितनी बड़ी आश्वस्ति होती है.

'दुपट्टा' कहानी, पहनावे के संदर्भ में अति आधुनिकता से ग्रस्त मानसिकता पर प्रहार है. घर परिवार की बुजुर्ग महिलाएँ कभी बहू-बेटियों को दुप्पटे की मर्यादा और संस्कार समझाया करती थीं. लेखिका ने उन्हीं मूल्यों को अपने पात्र के जरिए सशक्त और प्रभावी तरीके से प्रेषित किया है कि स्त्री स्वतंत्रता और सशक्तिकरण का अर्थ सिर्फ पहनावे की आधुनिकता नहीं है.

'स्पेस' संग्रह की सबसे मार्मिक कहानी है. इस कहानी को पढ़ना, विषाद की लहर से गुजरना है. मन काँप उठता है और देर तक उसकी सिरहन बनी रहती है. एक बेटा जो विदेश में शादी के नाम पर उत्पीड़न के दुश्चक्र में फँस गया है और उसके पास आई माँ भी उनके झगड़ों का शिकार बन गई है. माँ का मन असहाय बेटे के लिए तड़प रहा है पर बहू के हिंसक अत्याचारों को झेलना भी दुष्कर हो जाता है. आज जब हमारे यहाँ भी आए दिन इस तरह की पुरुष उत्पीड़न की घटनाएँ सामने आ रही हैं, यह कहानी बहुत प्रासंगिक हो जाती है.

'नियति' कच्ची उम्र में विधवा हो गई विभावरी की कहानी है, जो हर तरफ से संघर्ष में घिरी है. ऐसे कठिन समय में जब उसके अपने उसे सहारा नहीं देते, सीमा जी न सिर्फ उसे घर लेकर आती हैं बल्कि उसके भविष्य के लिए दूसरी शादी के लिए यत्न करती हैं. अंत में सीमा जी का उदार प्रस्ताव फिर एक बार सकारात्मक और भले लोगों पर विश्वास कायम करता है. 'अत्र कुशलम् तत्रास्तु' एक और भावपूर्ण कहानी है, बिलकुल हमारे परिवेश से निकली. दादाजी जैसे पात्र हम सभी के बुजुर्गों के प्रतिनिधि हैं, जिनके जीवन का ध्येय ही पूरे कुनबे को एकजुट करना है.

मैं उन्हें नहीं जानती (कथा संग्रह)
उर्मिला शिरीष
शिवना प्रकाशन, सीहोर
कीमत- 225 रुपए

गीत

कीर्ति मेहता

खिलता रूप महकता यौवन, इठलाती है चाल.
सप्त सुरों की सरगम जैसे, मुद्रा देती ताल..

कमल नयन हैं नैना चंचल, लगते तीर कमान.
घाव करे गम्भीर हृदय पर, प्रणय प्रीति सन्धान..
स्याह चिबुक तिल लगता भँवरा, तक-तक नयन निहाल.
खिलता रूप महकता यौवन,
इठलाती है चाल..
रूप सुहाता मनहर उसका, करे नवल शृंगार.
दर्पण में छवि अपलक तकती,
कजरा नैनन धार..
बिंदी चमक रही दिनकर सी, उन्नत सुंदर भाल.
खिलता रूप महकता यौवन, इठलाती है चाल..
मदन मोहिनी उपमा दूँ क्या, वेणु अधर गोपाल.
पुष्प सुगन्धित केश सजाए, ज्यों कुसुमित हो जाल..
मांग रेख सिंदूरी लगती, दमक दामिनी लाल.
खिलता रूप महकता यौवन, इठलाती है चाल.

लघु कथाएं

विश्वास

मंजुला भूतड़ा

सुबह से खूब तैयारियां चल रही हैं. सबको क्रिकेट का एक दिवसीय फाइनल मैच देखना है. सभी को क्रिकेट का बहुत क्रेज है और फिर जब भारत- पाकिस्तान का मैच हो तब तो सारे देश का ही माहौल उत्सवी हो जाता है. अभय तो जैसे क्रिकेट का दीवाना है, खेलता भी बहुत अच्छा है. घर में भी सब लगे हुए हैं.

बच्चों के लिए पिज़्ज़ा, कोल्ड-ड्रिंक का आर्डर कर दिया गया है, बडों को सब्जी पूड़ी खाने का मन है वह भी बनाकर रख दी है. फिर नमकीन तो सभी को चाहिए.

इतने में मोनू बोली,मैं तो पानी का जग भी भरकर रख लेती हूं. क्यों मम्मी मिठाई भी है न? यानि सब तैयार हैं, टॉस का भी समय हो गया. और लो, भारत ने टॉस जीत लिया. भारत ने बोलिंग आप्शन चुना. पाकिस्तान की बैटिंग शुरू में तो अच्छी रही पर फिर विकेट भी फटाफट गिरने लगे और खिलाड़ी कोई बहुत अच्छा स्कोर नहीं कर पाए. अब भारत की बैटिंग थी सब उत्साहित थे पर अनिश्चितताओं के इस खेल में हमेशा ही रोमांच बना रहता है. दिग्गज खिलाड़ी जल्दी आउट होकर चले गए पर मध्यक्रम के बल्लेबाजों ने अच्छी पारी खेली और भारत को जीत के पास पहुंचा दिया. अजय समझ रहा था कि अभय तो कहीं दोस्तों के साथ क्रिकेट देख रहा होगा. इतने में ही उसे घर के अन्दर कुछ आहट सुनाई दी. उसने जाकर देखा कि अभय तो कोई उपन्यास पढ रहा है. वह बोला, भाई क्या हो गया, मैच नहीं देख रहे.

अरे हां, बता न क्या हुआ मैच में अभय ने पूछा. जीत गया भारत पर भाई, तुम क्या भूल गए थे? नहीं यार, भूला नहीं. अक्सर न जब मैं मैच देखता हूं तो इंडिया हार जाती है! इसीलिए मैं मैच देखने ही नहीं आया.

सब विस्मय से देख रहे थे ..अभय के विश्वास को!

बिरादरी का समाजशास्त्र

विनय अंजु कुमार

केतना बार कहा है कि ओकरे साथ मत उलझा करो, लेकिन हमरा बात कब्भों सुनाता है का तुमको, हर्दी बांधते हुए बड़बड़ा रही थी सुरजी.

बहुत सूज गया था रग्घू का देंह, और कहीं कहीं से खून भी निकल आया था.

जा के थाने रपट लिखा दो ओकरे खिलाफ, एकदम जनावर के तरह मारा है तुमको, देंह पोंछते हुए फिर बोली सुरजी.

ठीक कहत हो भौजाई, हम भी साथ चलब रपट लिखावे. अइसने लोगन क बिरोध जरुरी हौ, नाहीं त आगे और मुश्किल झेले के पड़ी, मिसिर जी बोले, जो तब तक रग्घू के दरवाजे पहुँच गए थे.

पाँय लागूं मिसिर जी, अब आप ही ले जाओ इनको थाने रपट लिखाने, सुरजी ने टुटही कुर्सी खींच दी आगे.

अबहीं बइठब नाहीं, लेकिन काल जरूर साथे चलब, मिसिर जी ने एक बार फिर रग्घू की तरफ देखा और चल दिए.

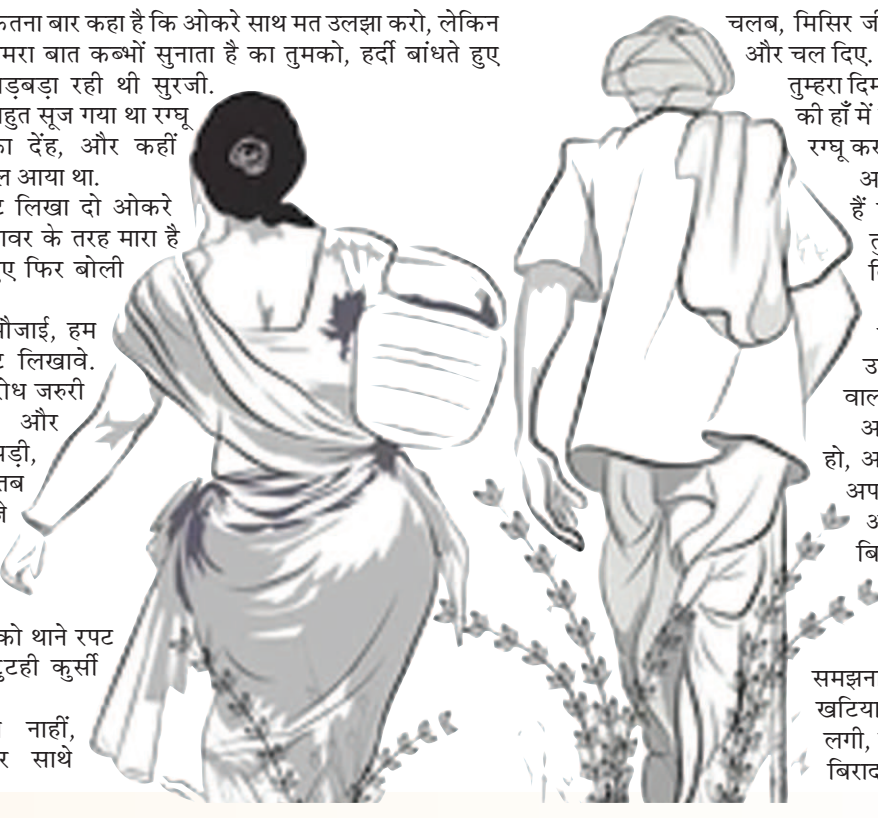

तुम्हरा दिमाग त नाहीं फिर गया है, लगी मिसिर जी की हाँ में हाँ मिलाने. अरे उ का आपन बिरादर हैं, रग्घू कराहते हुए खड़ा हो गया.

अच्छा, ई लोग आपन हैं जो इस तरह पीटत हैं तुमको. और मिसिर जी पराये हैं जो तुम्हरे साथ हैं और तैयार हैं थाने जाये के लिए, सुरजी को कुछ समझ नहीं आ रहा था. उसको तो बुरी तरह पिटा हुआ रग्घू नज़र आ रहा था जिसको देख कर ही उसके दिल में दर्द हो रहा था और पीटने वालों के लिए नफरत हो रही थी.

अरे सुरजी, कब समझेगी ई सब, चाहे जो हो, आपन बिरादरी वाला आपन ही होत है. अपने हाड़े गाढ़े में यही लोग काम आवत हैं और मिसिर जी के यहाँ आपन बिटिया क बियाह थोड़े न कर सकत हैं हम लोग, रग्घू दर्द को भींचते हुए समझा रहा था सुरजी को.

सुरजी के लिए इस समाजशास्त्र को समझना आसान नहीं था. उसने धीरे से रग्घू को खटिया पर लिटाया और फिर से हर्दी लगाने लगी, उसके दिमाग में मिसिर जी और अपनी बिरादरी का समीकरण उलझ गया था.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी